(515)

drishti | दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-12
(प्रश्न पत्र-II)

DTVF / OPT-24 **HL-2412**

निर्धारित समय: तीन घंटे Time Allowed: Three Hours	अधिकतम अंक : 250 Maximum Marks : 250

नाम (Name): प्रेमसिंह मीना

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 2412 dted. 30-12-2024

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

1	1	3	2	5	5	6

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

drishti | दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

drishti | दृष्टि The Vision

खण्ड - क

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिये: **10 × 5 = 50**

(क) सँदेसनि मधुबन-कूप भरे।
जो कोउ पथिक गए हैं ह्याँ ते फिरि नहिं अवन करे।।
कै वै स्याम सिखाय समोधे कै वै बीच मरे?
अपने नहिं पठवत नँदनंदन हमरेउ फेरि धरे।।
मसि खूँटी कागर जल भींजे, सर दव लागि जरे।
पाती लिखैं कहो क्यों करि जो पलक-कपाट अरे?

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश कृष्ण भक्ति काव्य धारा में पुष्टि मार्ग के महान महाकवि सूरदास द्वारा रचित है। 'भ्रमरगीत सार' का संकलन आचार्य शुक्ल ने किया है

प्रसंग ⇒ कृष्ण के मथुरा गमन पश्चात गोपियों के विरह को व्यक्त किया है।

व्याख्या ⇒ गोपियां कहती है कि कृष्ण को भेजे गये संदेशों और पतियां से कुए भर गये। जितने भी पाथी मथुरा गये उन्ही के हाथों सन्देश भेजे है परन्तु कृष्ण का कोई प्रत्युत्तर नही आया।

drishti | दृष्टि The Vision

है। लगता उनका पाती लिखना अब विदित। जल के मानो भीग गए है या फिर आग में जल गए है।

विशेष - काव्य सौन्दर्य

① ब्रज भाषा का सौन्दर्य व माधुर्य अद्भुत है
② रस - विप्रलंभ शृंगार (प्रवास विप्रलंभ)
③ भाव - माधुर्य गुण युक्त
④ अलंकार - उपमा व उत्प्रेक्षा।

भाव सौन्दर्य
① जायसी की नागमती भी अपने प्रियतम को संदेश भिजवाती है
" पिउ सो कहेउ संदेसड़ा हे भौंरा हे काग "
② सूर की भक्ति - दसधा (रागानुगा)
③ सूर पुष्टि मार्ग के जहाज (अष्टछाप)
④ प्रियतम के समाचार की उत्कंठा

प्रासंगिकता ⇒ वर्तमान सूचना व तकनीक के युग में भी देशीकरण ने मनुष्य के मध्य मानसिक दूरियों को बढ़ा दिया है

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ख) मोह-मद-मात्यो, रात्यो कुमति कुनारि सों,
बिसारि बेद लोक-लाज, आँकरो अचेतु है।
भावै सो करत, मुँह आवै सो कहत कछु,
काहू की सहत नाहिं, सरकस हेतु है।
'तुलसी' अधिक अधमाई हू अजामिल तें,
ताहू में सहाय कलि कपट-निकेतु है।
जैबे को अनेक टेक, एक टेक ह्वैबे की, जो
पेट-प्रिय-पूत-हित रासनाम लेतु है।।

संदर्भ - दिया गया व्याख्यांश 'रामकाव्य धारा के महाकवि तुलसी द्वारा रचित क्षीण प्रबंध धर्मी रचना 'कवितावली' के उत्तर काण्ड से लिया गया है

प्रसंग - तुलसी दास अपने प्रियतम आराध्य भगवान राम से दर्शन देने की प्रार्थना कर रहे है

व्याख्या ⇒ तुलसी कहते है कि उसने मोह, मद, लोक लाज सब त्याग दिया है। तथा किसी भी प्रकार की लशर्म उसे स्थवर नामे से डर नही लग सकती। आगे तुलसी कहते है कि हे राम जिस तरह अजामिल को

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

आपने भवसागर से तारा उसी तरह मेरी भी मुक्ति करो। इसलिए मैं लगातार राम नाम का स्मरण कर रहा हूँ।

काव्य सौन्दर्य

भाषा - ब्रज भाषा
अलंकार - उपमा व उत्प्रेक्षा
छंद - कवित्त
रस - भक्ति (दास्यभक्ति)
गुण - माधुर्य

भाव सौन्दर्य

① ईश्वर प्राप्ति हेतु नाम स्मरण का यही भाव कबीर के दृष्टिकोण को दर्शाते है
② 'अजामिल की कथा' आदि
③ तुलसी की भक्ति लोक जीवन की 'साधनावस्था' की भक्ति है

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) चुराता न्याय जो, रण को बुलाता भी वही है,
युधिष्ठिर! स्वत्व की अन्वेषणा पातक नहीं है।
नरक उनके लिए, जो पाप को स्वीकारते हैं;
न उनके हेतु जो रण में उसे ललकारते हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'कुरुक्षेत्र' में दिनकर ने अपना युद्ध सम्बंधी दर्शन व्यक्त किया है भीष्म पितामह व ~~युधि~~ युधिष्ठिर के मध्य संवादों के माध्यम से युद्ध के कारणों व युद्ध के दोषी व्यक्त किया है

दिनकर ~~युधि~~ भीष्म के माध्यम से कहते है कि जो अन्यायी है वही युद्ध का जिम्मेदार होता है अपने अस्तित्व की रक्षा कभी गलत नहीं होती। बल्कि जो लोग पाप को सहन करते है वे नरक के अनुगामी और जो मानव मात्र की भलाई हेतु युद्ध करते है वे मानवता का भला ही करते है

drishti | दृष्टि The Vision

विशेष - काव्य सौन्दर्य

भाषा - ओज गुण युक्त खड़ी बोली

लयात्मकता - अभिधा व व्यंजना शब्द शक्ति का प्रयोग

रस - वीर रस

भाव सौन्दर्य

① ~~कुछ~~ दिनकर ने अपराध सहने की क्षमता को निम्न तक तथा शोषण युक्त बताया है

② समाजवादी मार्क्सवादी दृष्टिकोण

③ शोषण का विरोध कल्याणप्रद

प्रासंगिकता - वर्तमान (आतंकवाद जैसी कुरीतियों के अंत में लाने में आपस प्रासंगिक

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(घ) रोई गँवाए बारह मासा। सहस सहस दुख एक एक साँसा।
तिल तिल बरख बरख परि जाई। पहर पहर जुग जुग न सेराई।।
सो नहिं आवै रूप मुरारी। जासों पाव सोहाग सुनारी।।
साँझ भए झुरि झुरि पथ हेरा। कोनि सो घरी करैं पिउ फेरा?।।
दहि कोइला भइ कंत सनेहा। तोला माँसु रही नहिं देहा।।
रकत न रहा, विरह तन गरा। रती रती होइ नैनन्ह ढरा।।
पाय लागि जोरै धन हाथा। जारा नेह, जुड़ावहु नाथा।।
बरस दिवस धनि रोह कै, हारि परी चित झंखि।
मानुष घर घर बूझि कैं, बूझै निसरी पंखि।।

संदर्भ ⇒ दिया गया पद्यांश सूफी काव्य धारा तथा प्रेमाश्रयी भक्ति काव्य के महान कवि 'मलिक मोहम्मद जायसी' द्वारा रचित प्रेमाख्यानात्मक महाकाव्य 'पदमावत' के नागमती वियोग खण्ड से उद्धृत है

प्रसंग ⇒ नागमति अपने प्रियतम रत्न सेन के सिंहल द्वीप जाने से अत्यन्त दुःखी हो उसकी दशा का वर्णन किया गया है

व्याख्या ⇒
नागमती को रोते हुए बारह महीने हो गये तथा वह वियोग में कोयला के समान काली व उसका शरीर बिल्कुल क्षीण भय हो गया है। नागमती प्रार्थना करती है कि

drishti दृष्टि The Vision

हे प्रियतम अब तो आप दर्शन दे दो।'

काव्य सौन्दर्य ⇒

① भाषा - ठेठ अवधी

② छंद - चौपाई व दोहा (कड़वकबद्ध)

③ अलंकार → अतिशयोक्ति (दाहि कोयला भई कैसे ---)

④ रस = विप्रलंभ ~~→~~ (वियोग) शृंगार

⑤ काव्य रूढ़ि - बारह मासा

~~भाव पक्ष~~

⑥ बिम्ब → दृश्य बिम्ब

भाव सौन्दर्य ⇒

① ~~नागमती का~~ 'साधारणीकरण' अवस्था -

शुक्ल जी - नागमती का रानीपन नहीं नारीपन उभरा है

② ऊहात्मक शैली - सूफीयों का भावनात्मक रहस्यवाद

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ङ) ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे विद्युत
जागी पृथ्वी-तनया-कुमारिका-छवि, अच्युत
देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन
विदेह का,-प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन
नयनों का-नयनों से गोपन-प्रिय सम्भाषण,-
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-पतन,-
काँपते हुए किसलय,-झरते पराग-समुदय,-
गाते खग-नव-जीवन-परिचय-तरु मलय-वलय,-
ज्योति:प्रपात स्वर्गीय,--ज्ञात छवि प्रथम स्वीय,-
जानकी-नयन-कमनीय प्रथम कम्पन तुरीय।

'राम की शक्ति पूजा' निराला की अनुपम कृति है। इसके माध्यम से ~~राम~~ निराला ने अपना महाप्राणत्व के साथ-साथ अपनी स्वयं की साधना, नारी शक्ति व देश की स्वतंत्रता का आह्वान किया है।

राम रावण युद्ध में राम निराशा से भर गये है तभी उनकी स्मृति में सीता से प्रथम मिलन की याद व नयनों का नयनों से गोपन संभाषण याद आता है। और राम अदम्य साहस व धैर्य से भर जाते है। साथ ही,

drishti | दृष्टि The Vision

तक- वल्लरी इत्यादि कोंपले नम्र आते है तथा राम को लीला के कोंपले व नया याद आते है जो इस लंका में राम का इंतजार रही है

विशेष - ① भाषा - तमाल वल्ली तत्सम हिन्दी

② छन्द - मुक्त - दुरन्त प्रवाह

8-8 मात्राओं पर यति

③ बिम्ब - कोमल (नयनों का - नयनों से)

④ रस - वीर रस

⑤ गुण - ओज गुण

भाव सौन्दर्य

① निराशा की स्थिति के स्मृतियाँ ही मनुष्य को वीरता पूर्ण कार्य की तरफ अग्रसर करती है

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

2. (क) 'कबीर एक महान संत और समाज-सुधारक ही नहीं, अद्वितीय कवि भी हैं।' इस कथन के परिप्रेक्ष्य में उन विशेषताओं का निर्देश कीजिए जो कबीर के काव्य की अद्वितीयता के कारण हैं। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

कबीर का व्यक्तित्व विविधताओं से भरा हुआ था। आचार्य शुक्ल ने कबीर के काव्य के प्रति प्रायः यह है कि कबीर की संवेदना पर गहराई अधिक है पर भाषा ठीक ठिकाने की ही है। वहीं दूसरी ओर आचार्य द्विवेदी को कबीर भाषा के डिक्टेटर व बादशाह नजर आते हैं जिनका भाषा पर अत्यन्त महत्वपूर्ण अधिकार था। कबीर के व्यक्तित्व में महान संत समाज सुधारक, भक्त व कवि सभी स्वरूप दिखाई पड़ते हैं।

कबीर का संत स्वरूप ⇒ कबीर संत थे इसलिए वे निर्गुण, अध्यात्म व भक्ति का स्वरूप को ग्रहण करते हैं कबीर अपने

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संत साहित्य के कारण सामाजिक रूढ़ियों व आडम्बरों पर चोट करते हैं वहीं ईश्वर भक्ति में चरम भावनात्मक भाव दिखाई देते हैं -

'भावनात्मक ईश्वर प्रेम'

तलफै बिन बालम मोर जिया
दिन नहीं चैन रात नहीं निंदियाँ तलफ-तलफ के भोर किया।"

कबीर का समाज सुधारक रूप

कबीर पंडो व मुल्लों पर व्यंग्य करते हैं -

" मूंड मुड़ाये हरि मिले सब कोई लेय मुड़ाय।
बार-बार के मुड़ते भेड़ न बैकुंठ जाय।'

(पंडितों पर व्यंग्य)

कांकर पाथर जोरि के मस्जिद लई बनाय
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाय"

(मुल्लों पर व्यंग्य)

drishti | दृष्टि The Vision

कबीर के समाज सुधारक व संत स्वरूप के कारण उन्होंने जाति प्रथा, भाषायी उन्नता इत्यादि पर भी प्रहार किया है -

" जाति-पाँति पूछे नहीं कोई हरि को भजै सो हरि को होई।"

" संसिकरत है कूप जल भाखा बहता नीर'

संत व समाज सुधारक के साथ-साथ कबीर एक अद्वितीय कवि भी है। जहाँ उनकी कविता काव्य शास्त्रीय प्रतिमानों के उत्पन्न प्रतिमानों को छू लेती है।-

① प्रतीक शब्द प्रयोग ⇒
कबीर कुत्ता राम का मुतियाँ मेरा नाऊ
गले राम की जेवड़ी जित खैंचु तित जाऊ।"

आचार्य द्विवेदी ने मुतिया शब्द को बड़ा जानदार बताया है

② बिम्बात्मकता - यद्यपि बिम्ब नवीन विधा है जिसका प्रतिपादन पिलैट ने किया

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

"सतगुरु हमसूँ रीझकर, कह्या एक परसंग
बरस्या बादल प्रेम का भीज गया सब अंग।
(स्पर्श बिम्ब)

(13) प्रतीक – कबीर की साखियों में उच्च कोटि के प्रतीकों का प्रयोग किया गया है –

"चलती चाकी देखिकर, दिया कबीरा रोय।
दो पाटन के बीच में साबुत बच्या न कोय।"

अतः कबीर न केवल उच्च कोटि के संत व समाज सुधारक है बल्कि अद्वितीय स्तर के कवि भी है। 500 वर्ष के हिन्दी साहित्य इतिहास में ~~अभी~~ आज तक कबीर से बड़ा व्यंगकार नहीं हुआ। कबीर की ही धारा को वर्तमान में नागार्जुन, जैसे जनकवि आगे बढ़ा रहे। ~~अ~~

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) 'दिनकर के 'कुरुक्षेत्र' में अपने समय की अनुगूँज सुनाई देती है।' इस मत के संदर्भ में कुरुक्षेत्र के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

दिनकर ने कुरुक्षेत्र में अपने युद्ध सम्बंधी दर्शन का प्रतिपादन करने के साथ-साथ अपने समय की चिंताओं व समस्याओं का चित्रण किया है तथा भीष्म पितामह के व ~~युधि~~ युधिष्ठिर के माध्यम से अपने मत का प्रतिपादन किया है —

युद्ध की विभीषिका ⇒ दिनकर का समय विश्व युद्धों की विभीषिका का समय था तथा विश्व ने भयानक भीषण विनाश को देखा। इसके दिनकर युद्ध करने के लिए जिम्मेदार पक्ष का चित्रण करते है —

" युद्ध ~~को~~ अनिवार्यता नहीं पर का
शांति ~~स~~ का ~~शमन~~ आ जाय हार तो
तिमिर औषधि के बिना उजाला क्या

drishti | दृष्टि The Vision

② दिनकर ने अपने समय के मार्क्सवादी अवधारणा का भी प्रतिपादन किया है तथा वर्ग समानता रूपी समाज की क्रांति की स्थापना का प्रयास किया।

" जब तक मनुज-मनुज का सुख भाग नहीं सम होगा
शमित न होगा कोलाहल × × × होगा।

③ दिनकर मार्क्सवादी हैं इसलिए अलौकिक अवधारणाओं में अविश्वास रखते हैं तथा इसी संसार को सुन्दर बनाने का आह्वान करते हैं —

" ऊपर सब कुछ शून्य-शून्य है,
कुछ भी नहीं गगन में।
जो कुछ भी है धर्मराज
सब मिट्टी में जीवन में।

④ चूंकि दिनकर ने समय [illegible] परमाणु बम विस्फोट की विभीषिका को देखा तथा विज्ञान के आविष्कारों

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

द्वारा बत्पाई गई तबाही को देखा तो दिनकर कुरुक्षेत्र के विज्ञान के प्रति मानव को सावचेत करते है-

"सावधान मनुष्य यदि विज्ञान है तलवार तो दे उसको तू फेंक"

दिनकर ने कुरुक्षेत्र में तमाम में तटस्थ रहने वाले समुदाय पर भी व्यंग्य किया है तथा प्रत्येक प्रकार के शोषण का विरोध किया है।

"नही पाप का भागी केवल व्याध, जो तटस्थ है समय लिखेगा उनका भी अपराध।"

अतः इस प्रकार दिनकर ने कुरुक्षेत्र में न केवल अपना दर्शन प्रतिपादित किया है बल्कि अपने समय के यथार्थ जीवन सत्य को भी व्यक्त किया है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) जेन बौद्धमत के प्रभाव के संदर्भ में 'असाध्य वीणा' कविता का विवेचन कीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

असाध्य वीणा का कथानक जापनी लोक कथा 'ओकाकुरा' पर आधारित है तथा अज्ञेय पर जेन बौद्ध मत का प्रभाव भी अधिक था। जेन बौद्ध मत महायान शाखा का ही एक भाग है। इनकी प्रमुख मान्यता है कि मनुष्य जीवन हमेशा प्रवाह में रहता है तथा आत्मा अक्षुण्ण है तथा केवल विज्ञान व चेतना का ही स्थानान्तरण होता रहता है।

ईश्वर भी प्राकृ... विज्ञान के प्रवाह व अस्तित्व की भावना

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

के पश्चात ही होती है।

सब्य साधक जीना को

इसलिए ही व्याग लगा क्योंकि यह

स्वयं को अहम को इसी तरह ~~को~~

भूल चुका था —

" मैं नहीं नहीं

मैं कहीं नहीं।"

जैन बौद्ध मतानुसार जीवन हमेशा

परिवर्तित है तथा एक परिवर्तन के

पश्चात विज्ञान व चेतना स्वयं

नये स्तर पर चली जाती है उसका

~~भिन्न~~ प्रभाव भी व्यक्तियों पर अलग

अलग - पड़ता है —

" अवतरित हुआ संगीत स्वयंभु

× × ×

राधा ने अलग - जना यक्षी ने

अलग सुना

drishti | दृष्टि The Vision

था। आराध्य बना था। जैन बौद्ध मत का न केवल प्रभाव है अपितु जैन बौद्ध मतों का साहित्यिक संकलन भी है जिसे ग्रोवर ने टी.एस इलियट के निर्वैयक्तिकता व परम्परा सिद्धान्त के साथ तुला किया है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

3. (क) 'राम की शक्तिपूजा' में निहित द्वंद्वात्मकता का उद्घाटन करते हुए उसके महत्त्व का निरूपण कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) कामायनी में निहित 'बिंब-सौंदर्य' का उद्घाटन कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) 'ब्रह्मराक्षस' कविता बिंब-निर्माण में नवीनता का परिचय देती है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में 'ब्रह्मराक्षस' कविता की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

4. (क) 'भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर सामने आया हो।' गोस्वामी तुलसीदास लोकनायकत्व की इस कसौटी पर कहाँ तक खरे उतरते हैं? 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

आचार्य द्विवेदी का यह कथन भारत की विविधता तथा जटिल समाज के आलोक में समन्वय व एकता के महत्व को दर्शाता है। तुलसी का काव्य लोक जीवन की साधना-बाधा का काव्य है जिसमें ~~उन्हो~~ तुलसी ने तत्कालीन समाज में व्याप्त कटुताओं, विचारों, साम्प्रदायिकता तथा भेदभाव एवं सामाजिक राजनीतिक विचारों के मध्य समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है। (जैसे स्वतंत्रता संग्राम का लोकनायक गांधी जी थे वही कार्य मध्यकालीन साहित्य में तुलसी ने किया।)

तुलसी ने सगुण - व निर्गुण भक्ति के मध्य समन्वय स्थापित किया —

"अगुनहि- सगुनहि नहीं कछु भेदा"

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

तुलसी के समय एक समस्या ज्ञान व प्रेम मार्ग के मध्य विचलन की भी थी जिसके तुलसी ने -

''ग्यानिहि प्रभु बिसेसी पियारा'' कहकर समन्वय स्थापित किया।

तुलसी ने शैव व वैष्णव भक्ति के मध्य समन्वय व एकता भी स्थापित की है तुलसी के राम शिव भक्त हैं तथा शिवजी भी राम की पूजा करते हैं

'' शिव द्रोही मम दास कहावा
सो नर मोहि ~~सपनेहु~~ सपनेहु नहीं भावा''

इसी तरह तुलसी ने समाज में व्याप्त जातीय भेद भाव व वर्णव्यवस्था के मध्य भी समन्वय स्थापित किया — व तुलसी के राम- 'शबरी' को भामिनी कहते हैं तथा शम्बूक वध का प्रसंग हटा दिया है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

तुलसी ने प्रेम विवाह का समर्थन करके नारी मुक्ति का समन्वय किया है राम व सीता की विवाह पूर्व मुलाकात का जिक्र किया है

" करत बतकही अनुज संग, मन प्रिय रूप लुभान'

तुलसी ने अपने काल में भारतीय आदर्श संयुक्त परिवार के मूल्यों व गुणों के मध्य भी समन्वय स्थापित किया है— सीता आदर्श पत्नी, राम आदर्श बेटे, पति व राजा तथा भाई है

" राम भरत दो सुत सम जानी।"

तुलसी ने समाज में व्याप्त हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिकता का समन्वय भी किया है राम का नाम 'गरीब नवाज' सम्बोधन ~~करना~~ है। तुलसी कहते है—

"माँगि के खाइबो मसित को सोवो
लेबो एक न देबो का दो "

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

तुलसी ने साहित्य के क्षेत्र भाषायी द्वैत का भी समन्वय किया है। तुलसी जहाँ संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान है परन्तु रामचरित मानस की रचना अवधी व कवितावली को ब्रज मे लिखते है लोक भाषा का समर्थन -

"का भाषा का संस्कृत, प्रेम चाहिए साँच
काम जु आवै कामरी, का लै करिय कुमाच।"

तुलसी ने शिल्प के स्तर पर भी समन्वय किया है अलंकार, प्रतीक, बिम्ब, रस रचनादि का प्रयोग रामचरित मानस के उचित प्रकार से किया है।

अतः अपने साहित्य की संवेदनशीलता, विविधता तथा लोगों की समन्वय क्षमता ने ही तुलसी को लोकनायक के रूप में स्थापित किया है।

(ख) 'बादल को घिरते देखा है' कविता के शिल्प पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'बादल को घिरते देखा है' नागार्जुन की गीत रूप में लम्बी कविता है। इसमें नागार्जुन ने हिमालय क्षेत्र का आँखों देखा वर्णन किया है। बादल को घिरते देखा है का शिल्प विन्यास निम्न प्रकार है -

① काव्य रूप - गीतात्मक रूप में लिखित लम्बी कविता है। नागार्जुन ने आँखों देखा प्रत्यक्षात्मक वर्णन किया है।

② भाषा — कविता की भाषा 'तत्सम' है जो नागार्जुन की मूल प्रकृति के समान ही नहीं है परन्तु ऐतिहासिक व भावनात्मक कथानक के अनुरूप है।

" कहां गया धनपति कुबेर
कहां गयी उसकी अलका

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

नहीं ठिकाना काली नाग के-
पोंछ सजावाही गंगा मल का।" (केदारनाथ)

③ प्रतीक = कविता में प्रतीकों का सघन प्रयोग किया है। तथा प्रसाद की कामायनी व निराला की राम की शक्तिपूजा के कैलाश पर्वत के प्रतीकों पर प्रश्न उठाते हैं।

④ बिम्बात्मकता = बिम्बों का सघन प्रयोग नागार्जुन ने किया है विशेषत गतिज व जटिल दृश्यात्मक बिम्ब.

" मैंने तो हंसमिल को
गरज - गरज भिड़ते देखा है
बादल को घिरते देखा है" (दृश्य बिम्ब)

नागार्जुन ने गतिज व संश्लिष्ट बिम्बों का भी प्रयोग किया है -

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

तुहिन कणों पर × ×
मादक किन्नर किन्नरियों की
उंगली को वंशी पर फिरते देखा है (शिल्प)

(5) व्यंग्य - नागार्जुन ने कवियों द्वारा हिमालय वर्णन की शैलियों पर व्यंग्य भी किया है

(6) काव्य रूढ़ि - नागार्जुन ने चकवा-चकवी प्रसंग के माध्यम से भारतीय काव्य रूढ़ि का प्रयोग किया है

अतः इस प्रकार बादल को घिरते देखा है कविता का शिल्प अत्यन्त उत्कृष्ट श्रेणी का है जो नागार्जुन न केवल उत्कृष्ट जनकवि बनाता है बल्कि सौन्दर्य चित्रण के उच्चतम स्तर पर स्थापित भी करता है

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) 'राम की शक्ति-पूजा' निराला की ही 'शक्ति-पूजा' है। इस मत की सार्थकता पर विचार कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'राम की शक्ति पूजा' निराला जटिल संवेदना युक्त कविता है। जिसमें राम सीता की मुक्ति हेतु शक्ति का आह्वान करते हैं। समीक्षकों का आक्षेप है कि 'राम की शक्ति पूजा' निराला की ही शक्ति पूजा है विशेषतः दूधनाथ सिंह -

निराला की शक्ति पूजा " राम की शक्ति पूजा

(1) निराला स्वयं भी शक्ति के उपासक थे तथा उनका बड़ा समय बंगाल में बीता था।

(2) राम की ही तरह निराला भी जीवन सरोज की मृत्यु पश्चात अत्यन्त निराश थी जिसकी अभिव्यक्ति 'सरोज स्मृति' के द्वारा की गई। शक्ति पूजा में निराला पुनः जीवन में जिजिविषा

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

के साथ लौटकर आये हैं—
"वह एक और मन रहा राम का
जो न थका, जो नहीं जानता दैन्य वना"

③ राम की तरह निराला भी जीवन में शुरू से ही संघर्ष करते आये हुए थे। जिस तरह राम को वनवास फिर सीता का ~~अपहरण~~ अपहरण का सामना करना पड़ा निराला भी आरम्भ में गरीबी की मनोहरा देवी का चला जाना फिर सरोज की मृत्यु तथा उत्तम काव्य कौशल के बावजूद कवि कर्म में असफलता व संपादकों द्वारा निरंतर उपेक्षा
"नित जीवन में पाता ही आया विरोध
~~धन~~ धिक्का! हाय उद्धार जानकी का हो न सका"

④ निराला के राम शक्ति की उपासना ~~और~~ साधनात्मक रहस्यवादी तरीके

drishti | दृष्टि The Vision

से करते हैं। स्वयं निराला भी शैववादी थे तथा राम कुंडलिनी - महाकुंडलिनी एवं सहस्त्रार-चक्र तक गये।
"चक्र से चक्र चढ़ता ही गया निरलस"

(5) अंतिम आक्षेप ये है कि राम की शक्ति पूजा में राम का शारीरिक सौन्दर्य की संरचना व निराला का शारीरिक स्वरूप समान ही है। निराला भी अदम्य जीजीविषा व शेक्स बाइबल जुटे थे।

अत. राम की शक्ति पूजा एक तरह से निराला की ही शक्ति पूजा है। यद्यपि यह ध्यान रखना चाहिए की यह एक नवजागरण की कविता है जिसकी संवेदना में नारी मुक्ति, जीव मुक्ति, भारत की स्वतंत्रता व निराला की शक्ति पूजा का भी संश्लिष्ट अर्थ ग्रहण करती है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

खण्ड - ख

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

5. **निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिये:** **10 × 5 = 50**

(क) कविता ही हृदय को प्रकृत दशा में लाती है और जगत् के बीच क्रमशः उसका अधिकाधिक प्रसार करती हुई उसे मनुष्यत्व की उच्च भूमि पर ले जाती है। भावयोग की सबसे उच्च कक्षा पर पहुँचे हुए मनुष्य का जगत् के साथ पूर्ण तादात्म्य हो जाता है, उसकी अलग भावसत्ता नहीं रह जाती, उसका हृदय विश्व-हृदय हो जाता है।

संदर्भ - दिया गया गद्यांश ' ~~सामन्या~~ ' हिन्दी निबंध विधा के युग पुरुष आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी के काव्यशास्त्रीय निबंध 'कविता क्या है' से उद्धृत है। जिसका संकलन चिंतामणि में किया गया है।

प्रसंग → शुक्ल जी कविता ~~की~~ के महत्व को समझा रहे हैं तथा कविता को भाव व ज्ञान योग के ~~समक्ष~~ ~~समकक्ष~~ समकक्ष बताया है।

व्याख्या ⇒ कविता मनुष्य को उच्चतम आदर्श मानवीय गुणों तक ले जाती है तथा भाव योग के साथ मिलकर मानव हृदय को वैश्विक हृदय के रूप

drishti | दृष्टि The Vision

में परिवर्तित करती है।

विशेष —

① भाषा - तत्सम है

② ~~भाषा~~ विचारों की गूढ़ गुम्फित परम्परा को शुक्ल जी ने कविता के माध्यम से व्यक्त किया है।

③ कविता में उत्पन्न रस दशा को ब्रह्मानंद सहोदर के समान माना है

④ कविता हृदय की मुक्ति का रास्ता है।

⑤ अल्पविरामों का प्रयोग।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) प्रमाण! प्रमाण अभी खोजना है? आँधी आने के पहले आकाश जिस तरह स्तम्भित हो रहता है, बिजली गिरने से पूर्व जिस प्रकार नील कादम्बिनी का मनोहर आवरण महाशून्य पर चढ़ जाता है, क्या वैसी ही दशा गुप्तसाम्राज्य की नहीं है?

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ एवं प्रसंग ⇒ दिया गया गद्यांश नवजागरण चेतना के नाटककार - जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटक स्कन्द गुप्त से उद्धृत है। इन पंक्तियों में गुप्त साम्राज्य की क्षीण व कमजोर स्थिति के बारे में बताया है।

व्याख्या।

चारों तरफ के संकटों के कारण रचे जा रहे घृणित षड्यंत्रों के कारण गुप्त साम्राज्य की हालत खराब है। तथा पर्व व अग्र सक्रिय पुरसा प्रबंध करने के लिए योग्य बनाने की आशा में वार्तालाप है

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

विशेष

① प्रसाद की भाषा ऐतिहासिक वातावरण के कारण तत्सम है।

② नाटक की भाषा काव्यात्मक व लयात्मक है

③ प्रसाद का दर्शन - शैवाद्वैत वाद को व्यक्त किया है।

④ प्रासंगिकता

बाहरी खतरों से निपटने के लिए आंतरिक व बाहरी सुरक्षा आज राष्ट्रों की सबसे बड़ी चिंता हो गई है।

उदा - रूस - युक्रेन के परिप्रेक्ष्य को देख सकते है।

(ग) मुझे यह कहने में हिचक नहीं कि मैं और चीजों की तरह कला को भी उपयोगिता की तुला पर तौलता हूँ। निस्सन्देह कला का उद्देश्य सृष्टि की पुष्टि करना है और वह हमारे आध्यात्मिक आनन्द की कुंजी है, पर ऐसा कोई रुचिगत मानसिक तथा आध्यात्मिक आनन्द नहीं, जो अपनी उपयोगिता का पहलू न रखता हो।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सन्दर्भ व प्रसंग ⇒ प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचन्द द्वारा लिखित निबंध' साहित्य का उद्देश्य से उद्धृत है। इसमें जीवन में साहित्य की उपयोगिता बताई गई है।

व्याख्या ⇒ कला का मुख्य उद्देश्य जीवन में सन्तुष्टि स्थापित करना होता है तथा कला जीवन में आनन्द की उपलब्धि करती है तथा प्रत्येक आनन्द कहीं न कहीं अपनी उपयोगिता रखता है अर्थात प्रत्येक वस्तु का जीवन में महत्व होता है।

विशेष

(1) कला का जीवन में

drishti दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

महत्व दिखाया है

(2) पूर्ण क्रियाओं का उचित प्रयोग किया गया है

(3) भाषा तद्भवी व तत्समी है

(4) मूल्य का उपयोगितावादी नजरिया

(5) भोगवादी मानसिकता की अभिव्यक्ति

(6) भाषण व अभिभाषण शैली

(घ) जीवन का कोई अनुभव स्थायी और चिरन्तन नहीं। जीवन की स्थिति समय में है और समय प्रवाह है। प्रवाह में साधु-असाधु, प्रिय-अप्रिय सभी कुछ आता है। प्रवाह का यह क्रम ही सृष्टि और प्रकृति की नित्यता है। जीवन के प्रवाह में एक समय असाधु, अप्रिय अनुभव आया इसलिये उस प्रवाह से विरक्त होकर जीवन की तृषा को तृप्त न करना केवल हठ है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ- दिया गया गद्यांश 'मार्क्सवादी रचनाकार यशपाल द्वारा रचित नायिका प्रधान उपन्यास 'दिव्या' से लिया गया है

प्रसंग - ~~एक~~ कान्ते पंक्तियाँ उपन्यास के अंतिम भाग से ली गई है इनमे आशावाद व जीवन की निरन्तर बदलाव का सन्देश दिया गया है

व्याख्या - जीवन के अनुभव समान नही तथा बदलते रहते है। - ~~सृष्टि व प्रकृति~~ दोनो की पूर्णता नित्य बदलाव व परिवर्तन मे है। एक गलत व बुरा अनुभव जो आपको नीचे गिरा गया उत्तर उसी रहना इसी तरह गलत है जनय

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

हमेशा बदलता रहता है

विवेचन -
(1) भाषा सरल व लयात्मक
(2) बुद्ध दर्शन के क्षणवाद व प्रतीत्यसमुत्पादवाद का प्रभाव
(3) निरंतर परिवर्तन व गतिशीलता की महत्ता
(4) मानव जीवन की सकारात्मक अभिवृत्ति
(5) शांत रस विशेषतः आनंदमूलक शांत रस का प्रभाव

प्रासंगिकता - प्रकृति व मनुष्य निरंतर पारस्परिक रूप से बदल रहे है। वर्तमान मानसिक तनावों व कुंठा एवं संबंधों को सुधारने हेतु प्रासंगिक संदेश।

drishti | दृष्टि The Vision

(ङ) उसकी आंखें बन्द हो गयीं और जीवन की सारी स्मृतियाँ सजीव हो-होकर हृदय-पट पर आने लगीं, लेकिन बे-क्रम, आगे की पीछे, पीछे की आगे, स्वप्न-चित्रों की भाँति बेमेल, विकृत और असम्बद्ध। वह सुखद बालपन आया, जब वह गुल्लियाँ खेलता था और माँ की गोद में सोता था। फिर देखा, जैसे गोबर आया है और उसके पैरों में गिर रहा है। फिर दृश्य बदला, धनिया दुलहिन बनी हुई, लाल चुंदरी पहने उसको भोजन करा रही थी। फिर एक गाय का चित्र सामने आया, बिल्कुल कामधेनु-सी। उसने उसका दूध दुहा और मंगल को पिला रहा था कि गाय एक देवी बन गयी और...।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संदर्भ - ~~लिया गया~~ व्याख्येय गद्यांश उपन्यास सम्राट 'प्रेमचंद' के कालजयी व ~~...~~ कृषक जीवन के महाकाव्य 'गोदान' से लिया गया है।

प्रसंग = उपन्यास के अंतिम हिस्से में होरी मरणासन्न अवस्था में है तथा उसे अपने जीवन की स्मृतियाँ दिखाई दे रही है

व्याख्या

संघर्षरत होरी मरजाद व शोषण की चक्की में पिसता हुआ अपने प्राण त्यागने की अवस्था में है। तथा उसे जीवन की कुछ स्मृतियाँ दिखाई देती है जिनमे धनिया से शादी, गोबर का जनम व गाय की लालसा ३. तथा कामधेनु रूप के

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

गाय।

विशेष : भाषा - बिम्बात्मक 'हिन्दुस्तानी'

(2) सघन चित्रात्मक भाषा

(3) उत्तम पुरुष व चेतना प्रवाह शैली

(4) होरी का त्रासदी पूर्ण अंत

(5) होरी का जीवन जाति बिरादरी व मरजाद की चक्की में पिसते हुए अपनी छोटी सी गाय की आशा को पूरा न कर पाना।

(6) भारतीय किसान की त्रासदीपूर्ण स्थिति का यथार्थवादी चित्रण।

drishti | दृष्टि The Vision

6. (क) 'प्रसाद की नाट्यभाषा उनके नाटकों की अभिनय-संभावनाओं को क्षरित करती है।' स्कंदगुप्त के आधार पर इस मत का परीक्षण कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) 'दिव्या' उपन्यास के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) आप आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंधों को वस्तुनिष्ठ मानते हैं या व्यक्तिनिष्ठ? अपना मत प्रकट कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

7. (क) 'मैला आँचल में डॉ. प्रशांत का चरित्र लेखक के सपनों एवं आदर्शों का प्रतीक बनकर उपस्थित हुआ है और इस कारण उसकी विश्वसनीयता खंडित हो गई है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में डॉ. प्रशांत के चरित्र का अवलोकन कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मैला आँचल रेणु का प्रथम आँचलिक उपन्यास है। रेणु ने इसमें मेरीगंज की कथा के माध्यम से भारतीय गांवों के यथार्थ को चित्रित किया है।

मूलतः मैला आँचल स्थिति व वातावरण प्रधान उपन्यास है परन्तु डॉ. प्रशान्त का चरित्र मे रेणु ने अपने आदर्शों व सपनों को स्थापित किया है। डॉ. प्रशान्त मैला आँचल का केंद्रीय चरित्र है जो काला अजार बीमारी का इलाज का अनुसंधान करके ग्रामीण भारत की स्वास्थ्य समस्याओं का निवारण करना चाहता है। ~~समा~~

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

प्र. प्रशान्त का चरित्र →

(1) प्रशान्त एक युवा डॉक्टर है जो सहज व स्वतंत्र चरित्र है। तथा भारत के ग्रामीण भारत की तस्वीर बदलने की चेष्टा रखता है।

(2) प्रशान्त गाँव वालों का इलाज करता है - अंधविश्वास निवारण = 'कमली की मनोस्थिति को समझकर इलाज"

(3) प्रशान्त राष्ट्रीय चेतना युक्त व मिलनसार है राष्ट्रीय आंदोलन में जेल जाता है। तथा निश्छल मेहनत व ईमानदारी से सबका प्रिय बन जाता है

(4) प्रशान्त ग्रामीण भारत के असली रोग की पहचान करता है - गरीबी व " लड़की की मौत बिना दवा दारू के

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

ठीक हो जायेगी।'

(5) प्रशान्त जेल से आने के पश्चात ममता कहता है कि वह फिर से अनुसंधान करेगा
" मैं प्यार की खेती करना चाहता हूँ।
भारत माता के मैले आँचल के
तले।"

क्या रेणु के आदर्शों व प्रतीकों ने प्रशान्त के चरित्र को कमजोर किया है ⇒

~~व~~ रेणु ~~का~~ ~~व~~ का विश्वास समाजवाद के था तथा उनकी सहानुभूति कालीन के साथ होती थी ~~रेणु~~ रेणु ने प्रशान्त के माध्यम से अपने आदर्श - वैज्ञानिकता, समानता, महिला सशक्तिकरण, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, ~~आदि~~ राजनीतिक विघटन आर्थिक असमानता, शोषण व भ्रष्टाचार

की समस्याओं को उठाया गया है परन्तु इस कारण प्रशान्त का चरित्र की विश्वसनीयता खण्डित नहीं होती। [illegible] बल्कि जेल से आने के बाद प्रशान्त की विश्वसनीयता मजबूत होती है

दरअसल मैला आँचल ~~चरित्र~~ प्रधान उपन्यास भी नहीं है बल्कि ~~व्यक्ति~~ परिवेश घटना व वातावरण के कारण निर्मित हुआ। तथा मैला आँचल ही वह है जो लेखक के प्रतिपाद्य को दर्शाता है हालांकि डॉ. प्रशान्त एक सशक्त चरित्र बना है

drishti
दृष्टि The Vision

(ख) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में 'मल्लिका' के रूप में मोहन राकेश एक अविस्मरणीय चरित्र की सर्जना में कहाँ तक सफल सिद्ध हुए हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'आषाढ़ का एक दिन' मोहन राकेश का अस्तित्ववादी दर्शन तथा अनिर्णय की स्थिति में व्यक्ति का आत्म संघर्ष व लगातार गलत निर्णयों से व्यक्ति का आत्म निर्वासन व अजनबीपन के कारण विसंगत जीवन को व्यक्त करता है

मल्लिका 'आषाढ़ के एक दिन' नाटक की नायिका है जो अपनी भावनाओं से प्रेम करती है। मल्लिका के चरित्र की विशेषताएं निम्न है—

(1) भावात्मक प्रेम - मल्लिका भावात्मक प्रेम को साध्य समझती है -

"मैंने केवल अपनी भावना का वरण किया है।"

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

② औदात्यपूर्ण प्रेम → मल्लिका कालीदास को उज्जयिनी जाने से रोकती है नहीं तथा उसका प्रेम कालीदास के प्रति उच्च श्रेणी का है जबकि कालीदास मल्लिका को सिर्फ ~~भावों~~ के स्मृति में याद रखता है और वास्तविक जीवन में भूल जाता है।

③ त्याग की भावना → मल्लिका जीवन छायावादी त्याग मूलक भावना पर आधारित है। जो स्कंदगुप्त की देवसेना व कामायनी की नायिका के समान है।

④ आत्म विश्वास युक्त — मल्लिका शुरुआत से ही आत्म विश्वास युक्त चरित्र है जो अपना निर्णय स्वयं लेती है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

"मल्लिका का जीवन उसकी स्वयं की संपत्ति है"

समीक्षकों का आक्षेप है कि मल्लिका का अंत में वेश्या बनना उसके गलत निर्णयों तथा व्यवहार का ही नतीजा था क्योंकि वह कालिदास को अपने जीवन का आधार बना लेती है जिससे उसकी नियति इस तरह हो जाती है तथा यहां मोहन राकेश असफल ~~रहे~~ रहे हैं -

वस्तुतः मल्लिका स्वयं वारांगना बन जाती है परन्तु उसने अपने द्वारा किसी अन्य के जीवन को विषाक्त नहीं होने दिया तथा उसका यह चरण भी विषम परिस्थितियों के कारण विवशतापूर्ण ~~तरीके~~ उठाया गया कदम है और मोहन राकेश का उद्देश्य किसी आदर्श की स्थापना नहीं बल्कि यथार्थ का नग्न चित्रण करना ही है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) 'महाभोज' उपन्यास में निहित नाटकीयता के उन बिंदुओं को रेखांकित कीजिये जिनके कारण उसका नाट्य-रूपांतरण रंगमंच पर सफल सिद्ध हुआ है। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

महाभोज मन्नू भंडारी का कालजयी राजनीतिक उपन्यास है मन्नू भण्डारी चूंकि ~~[illegible]~~ टीवी धारावाहिको की पटकथा लेखक रही है इसलिए महाभोज में नाटकीयता के अंश जगह-जगह विद्यमान है

महाभोज की शुरुआत ही नाटकीयता के साथ होती है-

"लावारिश लाश को गिद्ध नोच-नोच कर खा रहे है।"

महाभोज में नाटकीयता

① कथानक व कथावस्तु ⇒ महाभोज का कथानक राजनीतिक नीतियो व विद्रूपताओ जटिलताओ व भ्रष्टाचार व राजनीति के अपराधीकरण व जातीय शोषण पर

drishti | दृष्टि The Vision

आधारित है जिससे इसकी कथानक नाटकीय बन गया है।

② विनाटक भाषा ⇒ चित्रात्मकता

" आवेश से मुँह से थूक भी छूटे बाहर आने लगी तथा काला चेहरा बैगनी हो गया।"

③ संवादात्मक कथोपकथन → महाभोज में पात्रों ~~की भाषा~~ के संवाद नाटकों की तरह सुन्दर व गतिशील है — बिन्दा व अमरोना के मध्य

~~बिन्द~~" बिसू तुम्हारा दोस्त था नहीं दुश्मन था

दुश्मन ...?

जो बीच में ~~छोड़~~ दगा दे जाये उसे आप दोस्त कहेगो।

④ महाभोज के मंच अंकों के

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सीनिक मैथड का प्रयोग किया है जिसमे मौन की भाषा का अधिक प्रयोग है।

(5) भाषा-शैली पात्र अनुरूप तथा कथानक के अनुसार है।

(6) पात्र व चरित्र → महाभोज में पात्र व चरित्र उचित है भीड़ नहीं जुटाई गई है तथा प्रमुख पात्रों बिसू, सक्सेना, दा साहब को प्रमुख स्थान तथा गौण चरित्रों को कम स्थान दिया गया है।

अतः महाभोज अपनी चमत्कारिक व्यंग्य क्षमता, भाषा की जीवंतता व संवादों की गति व सीनिक मैथड के कारण नाट्य रूप में अत्यन्त सफल रहा है

8. (क) स्कंदगुप्त सुखांत नाटक है या दुखांत, या प्रसादांत? अपना तार्किकमत प्रकट कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) रामचंद्र शुक्ल के निबंध 'श्रद्धा-भक्ति' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) 'कफन' की संवेदना पर विचार कीजिये। क्या यह कहानी दलित-विरोधी है? 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)